दलितों व शोषितों का पाक्षिक पत्र

हमायती

सम्पादक–डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर

वर्ष 64 | अंक-1 | दिल्ली | अक्तूबर (प्रथम) | मूल्य : 2 रु.

भारतीय दलित साहित्य अकादमी, राजस्थान प्रदेश ने जैसलमेर में 'दलित साहित्य दिवस' के रूप में मनाया अपना प्रादेशिक सम्मेलन

• भोमाराम बोस

भारतीय दलित साहित्य अकादमी प्रदेश शाखा–राजस्थान एवं जिला शाखा–जैसलमेर के सयुंक्त तत्वावधान में एक दिवसीय दलित साहित्यकार सम्मान समारोह 'दलित साहित्य दिवस' के रूप में दिनांक 05 अक्टूबर 2025 को भाटिया बगेची, हनुमान सर्किल जैसलमेर में सफलता पूर्वक आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का प्रारंभ अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा संविधान निर्माता, भारत रत्न बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर के चित्र पर माल्यार्पण एवं पुष्प अर्पित कर किया गया। समारोह प्रो. स्वामी आत्माराम जी उपाध्याय प्रदेश अध्यक्ष, भारतीय दलित साहित्य अकादमी राजस्थान प्रदेश के परम सानिध्य में, श्रीमती अंजना मेघवाल, पूर्व जिला प्रमुख जैसलमेर के मुख्य आतिथ्य एवं अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर जी की अध्यक्षता में बहुत ही भव्यता के साथ आयोजित हुआ। सम्मेलन में विशिष्ट अतिथि के रूप में अकादमी के राष्ट्रीय महामंत्री श्री जय सुमनाक्षर, एडवोकेट सुंदरी डोंगर, ग्रेटर नोएडा उत्तर प्रदेश, डा. सुरेंद्र कुमार सेलवाल (राष्ट्रीय सचिव हरियाणा), श्री दलपत हिंगड़ा, भाजपा जिलाध्यक्ष जैसलमेर, एडवोकेट हेमन्त मीमरोट कार्यकारी दलित अधिकार केंद्र जयपुर, हेमलता कांसोटिया, प्रदेश अध्यक्ष (महिला प्रकोष्ठ), तगाराम भील अंतरराष्ट्रीय अलगोजा वादक, जैसलमेर मंचासीन रहे।

सर्वप्रथम तगाराम भील द्वारा अलगोजा पर डेजर्ट सॉन्ग की प्रस्तुति दी गई और पधारे हुए सभी मेहमानों का जैसलमेर की पावन धरा पर अभिवादन किया गया। प्रो. स्वामी आत्माराम जी उपाध्याय ने अकादमी के विजन पर प्रकाश डाला तथा राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर जी को उनके 86वें जन्मदिन पर राजस्थान प्रदेश की ओर से बधाई व सुभकामनाएं दीं गईं।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सुमनाक्षर जी के जन्मदिन को 'दलित साहित्य दिवस' के रूप में मनाती आ रही है। यह कार्यक्रम भी विशेष था जब थार के मरुस्थल में प्रदेश व अन्य राज्यों से पधारे विशिष्ट अतिथियों की गरिमामय उपस्थिति में राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर जी का 86वां जन्मदिन **'दलित साहित्य दिवस'** के रूप यहां मनाया गया। इस अवसर पर अकादमी की स्मारिका तथा अन्य दलित साहित्य का लोकार्पण किया गया।

सम्मेलन में मुख्य वक्ता श्री बाबूलाल निर्मल (राष्ट्रपति पुरस्कार

(शेष भाग... पृष्ठ 4 पर)

सम्पादकीय

बाबा साहब डा. अम्बेडकर और उनका जीवन संघर्ष

• डा. सुमनाक्षर

भारत की अंग्रेजी हुकूमत ने देश के अछूतों (दलितों) की समस्याओं को जानने के लिए सन 1930-31 में आयोजित इंगलैंड की राउंड टेबुल कान्फेंस में दलितों के प्रतिनिधि के रूप में बाबा साहब डा. अम्बेडकर को भाग लेने के लिए आमंत्रित किया था ताकि उनकी समस्याओं को जानने के बाद उनका निराकरण किया जा सके। महात्मा गांधी को इस कान्फ्रेंस में भारत के हिन्दुओं के प्रतिनिधि के रूप में बुलाया था। इस राउंड टेबुल कान्फेंस में गांधी जी ने बाबा साहब डा. अम्बेडकर के भारत के अछूतों के प्रतिनिधि के रूप में शामिल किये जाने पर आपत्ति जताते हुए कहा कि मैं भारत के समस्त हिन्दुओं का प्रतिनिधि हूं। चूंकि अछूत (दलित) हिन्दू धर्म का एक अंग है, अतः मैं उनका भी एकमात्र प्रतिनिधि हूं। डा. अम्बेडकर उनका प्रतिनिधि नहीं हैं। इसलिए भारत के अछूतों की ओर से उनका प्रतिनिधि करने या बोलने का उन्हें अधिकार नहीं है।

इस पर बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने कहा कि जब हिन्दुस्तान के अछूतों को अन्य सवर्ण हिन्दुओं की तरह समता के अधिकार नहीं हैं तो फिर वे कैसे हिन्दू हुए? और गांधी जी कैसे उन अछूतों के प्रतिनिधि हुए? छुआछूत, जाति भेदभाव और अन्याय, अत्याचार से पीड़ित हिदुस्तान के अछूतों का एकमात्र नुमायन्दा मैं हूं। सवर्ण जाति के नेता गांधीजी कभी भी उनके प्रतिनिधि नहीं हो सकते।

राउन्ड टेबुल कान्फ्रेंस की पहले दिन की गरमागर्म कार्रवाई बाबा साहब डा. अंबेडकर और महात्मा गांधी के बीच अछूतों के प्रतिनिधित्व के विषय में खत्म हुई। कान्फ्रेंस के दूसरे दिन जैसे ही बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने उनके प्रतिनिधित्व के सम्बन्ध में भारत के विभिन्न प्रान्तों से वहां के अछूत नेताओं द्वारा भेजे 250 के लगभग उन तार पत्रों को दिखाया जिनमें लिखा था कि बाबा साहब डा. अम्बेडकर ही एकमात्र उनके (अछूतों के) नेता हैं, गांधी जी नहीं। इन तार पत्रों को कान्फ्रेंस में दिखाते हुए बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने कहा कि ये सब तार–पत्र भारत के विभिन्न प्रान्तों के अछूतों ने भेजे हैं जिनसे वे न कभी मिले हैं और न ही वहां गये हैं, पर वे उन्हें अपना एकमात्र प्रतिनिधि व नेता मानते हैं।

गांधी जी ने इन तार–पत्रों को अपने खिलाफ एक षड्यंत्र मानते हुए इस राउन्ड टेबुल कान्फ्रेंस के बहिष्कार करने तक की चेतावनी दे दी, पर बाबा साहब डा. अम्बेडकर गांधी जी की इस गीदड़ भभकी से विचलित नहीं हुए। उन्होंने भारत के अछूतों की ओर से उनका प्रतिनिधित्व करते हुए उनकी समस्याओं का खुलकर खुलासा किया और उनकी समस्याओं के निराकरण के लिए देश की सत्ता, सम्पदा में बराबर का हक देने, निर्वाचन में उनकी आबादी के अनुपात में 'आरक्षण' देने, उनके पृथक निर्वाचन क्षेत्र बनाने, सरकारी नौकरियों व शिक्षण संस्थानों में उनका आरक्षण निर्धारित करके उन्हें भरने तथा अन्यों की तरह अछूतों को निर्वाचन में वोटों का अधिकार देने की मांग की थी। गांधी जी डा. अम्बेडकर द्वारा सुझाये उपायों

(शेष भाग... पृष्ठ 3 पर)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के प्रकाशन

विश्व धरातल पर दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
अंधा समाज और बहरे लोग	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
सिन्धु घाटी बोल उठी	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
अब नहीं रहेंगे हाशिये पर	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
अम्बेडकर शतक	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
विश्व विभूति डा. अम्बेडकर	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
दलित लेखक परिचय ग्रंथ (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	250/-
बुद्धा दू अम्बेडकर (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	150/-
दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
अम्बेडकर दर्शन	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
हमारे संत और समाज सुधारक	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
धर्म और समाज	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
आदिम जाति चमार (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	300/-
दलित उद्घोष	डा. सुमनाक्षर	100/-
दलित साहित्य की हुंकार-सात समन्दर पार	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
युगपुरुष बाबू जगजीवनराम	डॉ. सुमनाक्षर	200/-
प्राचीन आदिम जाति वाल्मीकि (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
मेरे साक्षात्कार–मेरा जीवन संघर्ष	डा. सुमनाक्षर	300/-
सभ्यता, संस्कृति, समाज और साहित्य	आचार्य गुरुप्रसाद	100/-
भारत रत्न डा. बी.आर. अम्बेडकर	राजमल 'राज'	100/-
मूल भारती से दलित	राजमल 'राज'	100/-
अम्बेडकरवाद बनाम सामाजिक परिवर्तन	राजमल 'राज'	100/-
दलित साहित्य–दशा और दिशा	डा. माता प्रसाद	200/-
दलित साहित्य से सामाजिक परिवर्तन	डा. माता प्रसाद	100/-
भारत की गुलामी के 22 सौ साल	प्रदीप कुमार मौर्य	250/-
बौद्ध धर्म–गया से अयोध्या तक	प्रदीप कुमार मौर्य	120/-
गांधी, अम्बेडकर और दलित	प्रदीप कुमार मौर्य	100/-
हम एक हैं	डा. माता प्रसाद	100/-
रैदास से संत शिरोमणि गुरु रविदास	डा. माता प्रसाद	100/-
ताकि सनद रहे	डा. सुमनाक्षर	200/-
Who's who Dalit Writers in India	Dr. Sumanakshar	500/-
Who's Who–International & National Awardees of B.D.S.A.	Dr. Sumanakshar	500/-

पुस्तक मंगाने के लिए अग्रिम राशि निम्नलिखित अकादमी के खाते में भेजें

Bharatiya Dalit Sahitya Akademi
A/c No. - 2592101012292 (Canara Bank)
IFSC - CNRB0002592
Branch - Model Town, Delhi

के निराकरण के विरोध में थे। वहीं डा. अम्बेडकर अन्त तक भारत के अछूतों (दलितों) को अन्य सवर्णों की तरह स्वतंत्रता, समता, न्याय बन्धुता दिलाने की मांग पर डटे रहे।

भारत के अछूतों का एकमात्र नेता व प्रतिनिधि डा. अम्बेडकर को मानने वाले ब्रिटिश सरकार को जो तार–पत्र (टेलीग्राम) इंगलैंड भेजे गये थे, उनके भेजने वालों में दलितों (अछूतों) के लोकप्रिय नेता स्वामी अछूतानन्द 'हरिहर', उ.प्र. राय साहब मुन्शी हरी प्रसाद टम्टा (उत्तराखंड), बाबू मंगूराम (पंजाब), मंत्री देवीदास जाटव (दिल्ली), एडवोकेट जोगेन्द्र नाथ मंडल (बंगाल) सीताराम चमार (महाराष्ट्र) आदि थे। इंगलैंड की राउंड टेबुल कान्फ्रेंस से भारत लौटने पर बाबा साहब डा. अम्बेडकर का इन दलित नेताओं ने अछूतों का सफल प्रतिनिधित्व करने पर जोर–शोर से स्वागत किया और तभी से अछूतों ने उन्हें अपना दिल से नेता माना। लेकिन गांधी जी ने इसे अपना अपमान माना और इसे उनके खिलाफ अंग्रेजी सरकार का एक षड्यंत्र करार दिया।

बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने भारत में अछूतों के साथ किये जा रहे अमाननीय दुर्व्यवहार की ओर ध्यान दिलाते हुए अंग्रेजी हुकूमत से कहा कि भारत को आजाद करने से पहले वह यहां के अछूतों को तथाकथित सवर्णों – ऊंची जाति वालों से आजाद कराये जो सदियों से उन्हें गुलाम, दास, बंधुआ बनाये हुए हैं, जिनके पास अधिकार के नाम पर कुछ भी नहीं है और कर्तव्य के नाम पर वे उनके आजीवन बंधुवा, दास व गुलाम हैं। कान्फ्रेंस में बाबा साहब डा. अम्बेडकर की इन बातों को महात्मा गांधी लाख कोशिश करने के बावजूद नहीं झूठला सके।

बाबा साहब डा. अम्बेडकर की बातों की सच्चाई को ध्यान में रखते हुए भारत के अछूतों को यहां के अन्य सवर्ण लोगों के समान लाने के लिए 17 अगस्त, 1932 को अंग्रेजी सरकार ने 'कम्युनल अवार्ड' नाम से एक घोषणा पत्र जारी किया। इसके तहत अछूतों (दलितों) को दो अधिकार दिये गये। पहला–दलितों की बहुल आबादी वाले क्षेत्रों में उनके लिए 'आरक्षित क्षेत्र' बनाने का विधान था। दूसरे प्रावधान में दलितों के निर्वाचन में दो वोट देने का अधिकार था।

एक वोट अपने पसन्द के सवर्ण प्रतिनिधि को चुनने का था और दूसरा वोट से आरक्षित क्षेत्र के 'दलित प्रतिनिध' को चुनने के लिए था। इसके अलावा सत्ता, शासन–प्रशासन, सरकारी नौकरियों व शिक्षण संस्थानों में उनकी आबादी के अनुपात में 'आरक्षण' दिये जाने का प्रावधान था।

ब्रिटिश सरकार द्वारा दलितों के उत्थान के लिए की गई इस घोषणा से उनके जीवन में सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक और राजनीतिक बदलाव आता, पर गांधी जी अंग्रेजी हुकूमत द्वारा दलितों के उत्थान को लिए दी गई इन सहूलियतों व प्रावधानों से खुश नहीं थे। उनका सोचना था कि इसका सारा श्रेय डा. अम्बेडकर को जायेगा और हिन्दुस्तान के दलित अछूत डा. अम्बेडकर के साथ लाभबन्ध हो जायेंगे। इससे हिन्दुस्तान का अछूत वर्ग उनसे अलग हो जायेगा। इससे देश व समाज में विघटन होगा। इसलिए अंग्रेजी सरकार द्वारा दलितोत्थान व कल्याण के लिए दिये जा रहे 'कम्युनल अवार्ड' का गांधी जी विरोध करते हुए आमरण अनशन की घोषणा कर दी कि जब तक इस 'कम्युनल अवार्ड' को वापिस नहीं लिया जाता वे अन्न–जल ग्रहण नहीं करेंगे।

गांधी जी की इस 'आमरण अनशन' की घोषणा से देश का सारा हिन्दू समाज थर्रा उठा। वे सब बाबा साहब डा. अम्बेडकर पर दबाब बनाने लगे कि वह अंग्रेजी सरकार की इस 'कम्युनल अवार्ड' को लौटा कर गांधी जी के प्राण बचायें। स्वयं गांधी जी की पत्नी कस्तूरबा गांधी ने भी बाबा साहब डा. अम्बेडकर से गांधी जी के प्राणों की रक्षा की भीख मांगी। इसके साथ ही बाबा साहब डा. अम्बेडकर को सनातनी हिन्दू डराने लगे कि अगर गांधी जी मर गये तो उसका सारा दोषार्पण डा. अम्बेडकर के सिर पर होगा और सवर्णों व दलितों के बीच कल्लेआम होता है तो उसका सारा दोष भी उन पर लगेगा। देश के सभी बड़े नेता, समाजसेवक और धार्मिक नेता भी इसी विचार के थे।

अन्त में भारी दबाव और अनुनय–विनय तथा दलितों के जान–माल की रक्षा को देखते हुए बाबा साहब डा. अम्बेडकर ब्रिटिश सरकार को यह कम्युनल अवार्ड को लौटाने और गांधी जी के साथ एक नया समझौता करने के लिए तैयार हुए।

24 सितम्बर, 1932 को देश के 100 के लगभग राजनेताओं, समाजसेवकों व धार्मिक नेताओं के समक्ष बाबा साहब डा. अम्बेडकर और गांधी जी के बीच 'पूने की यरवदा जेल में जहां गांधी जी आमरण अनशन पर थे, एक समझौता हुआ जिसे 'पूना पैक्ट' का नाम दिया गया। इस 'पूना पैक्ट' के तहत देश के दलितों का निर्वाचन में उनकी आबादी के अनुपात में आरक्षित वार्ड बनाने, उनके चुनाव का कोटा आरक्षित करने तथा सरकारी नौकरियां, शिक्षण संस्थानों में उनकी आबादी के अनुपात में पद आरक्षित करना तय किया गया। इस 'पूना पैक्ट' के तहत अछूतों तो सभी स्थानों पर समता के अधिकार देने तथा छुआछूत को दण्डनीय करार दिये जाने का प्रावधान था।

गांधी जी ने दलितों व सवर्णों के बीच ऊंचनीच, भेदभाव, छोटा–बड़ा का जातीय व वर्ण भेद मिटाने के लिए दलितों को नया नाम 'हरिजन' दिया और उनके उत्थान के लिए हरिजन सेवक संघ संस्था गठित की और 'हरिजन' अखबार निकाला। गांधी जी इसके बाद स्वयं हरिजन बस्ती में रहने लगे, पर इससे न तो सवर्णों का हृदय परिवर्तन हुआ और न ही इनके बीच की खाई ही कम हुई।

बाबा साहब डा. अम्बेडकर इसे गांधी जी का दिखाना मानते थे और वह सवर्णों के हृदय परिवर्तन कराने का गांधी जी के कामों को एक ढकोसला मानते थे। वह गांधी जी और उनकी कांग्रेस पार्टी के अछूतोद्धार कार्य से पूर्णतः असन्तुष्ट थे। उनका मानना था कि 'पूना पैक्ट' के नाम पर गांधी जी और उनकी शिष्य मण्डली ने उन्हें ठगा है। वे दलित–अछूतों को आज भी गुलाम, दास, अछूत बनाकर हिन्दूधर्म में रखना चाहते हैं। मैं अब ऐसा

नहीं होने दूंगा। सनातनी हिन्दू महात्मा गांधी को जवाब देते हुए बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने कहा था–''मैं हिन्दू पैदा हुआ हूं, यह मेरे बस की बात नहीं थी, पर मैं हिन्दू रहकर मरूंगा नहीं, यह मेरे बस में है।''

येवला की दलित महासभा में सन 1935 में बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने अपनी इस घोषणा को 14 अक्टूबर, 1956 के दशहरा के दिन अपने 10 लाख हिन्दू अनुयायियों के साथ नागपुर की दीक्षाभूमि में विश्वव्यापक बौद्ध धर्म की दीक्षा लेकर पूरा किया। काश, महात्मा गांधी बाबा साहब डा. अम्बेडकर की इस धर्मक्रांति को देखने के लिए जीवित होते। गांधी जी ने तो बाबा साहब डा. अम्बेडकर द्वारा येवला की महासभा में धर्म परिवर्तन की घोषणा पर दुःख जताया था, पर उसके साकार रूप को देखने के लिए वह जीवित नहीं थे। पर बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म को पुनः जीवित कर भारत के अछूत–दलितों को एक नये धर्म का मार्ग प्रशस्त कर दिया जहां व्यक्ति जाकर समता, शान्ति, करुणा, बन्धुता और स्वतंत्रता का अनुभव करते हुए गुनगुनाता है–बुद्धं शरणं गच्छामि, धम्मं शरणं गच्छामि, संघं शरणं गच्छामि। •

पृष्ठ 1 का शेष....भारतीय दलित साहित्य अकादमी, राजस्थान प्रदेश ने जैसलमेर में 'दलित साहित्य दिवस'...

से सम्मानित) राष्ट्रीय सचिव ने अकादमी द्वारा प्रदेश में शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, सामाजिक कार्यों के साथ–साथ समाज में व्याप्त कुरीतियों, नशा प्रवृत्ति, समाज के कमजोर व वंचित वर्गों की दशा व दिशा, बढ़ते दलित अत्याचार, महिला हिंसा, बेरोजगारी आदि विषयों पर अपने विचार व्यक्त किये।

श्री दलपत हिंगड़ा भाजपा जिलाध्यक्ष जैसलमेर ने अपने उद्‌बोधन में सामाजिक एकता व संगठन पर बल देने की बात कही। एडवोकेट सुंदरी डोंगर व हेमलता कांसोटिया ने महिला सशक्तिकरण व समाज की अंतिम पंक्ति में बैठे लोगों की ओर ध्यानाकर्षण किया। एडवोकेट हेमन्त मीमरोट ने कहा कि दलित अधिकार केंद्र, जयपुर वर्षों से दलित अधिकारों व सामाजिक असमानता आदि पर कार्य करता आ रहा है।

मुख्यातिथि श्रीमती अंजना मेघवाल ने कहा कि बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर के संघर्षों एवं भारत के संविधान की बदौलत ही हमें अधिकार मिले हैं, उन्होंने महिला सशक्तिकरण व समाज के कमजोर वर्गों के लिए संविधान में विशेष प्रावधान किए, जिसकी बदौलत ही आज हम स्वाभिमान के साथ अपना जीवन यापन कर रहे हैं। वरिष्ठ साहित्यकार मांगीलाल रांगी, पाली द्वारा काव्य–पाठ किया गया। पाली जिलाध्यक्ष डॉ. मोहनलाल सोनल 'मनहंस' द्वारा भीम वंदना प्रस्तुत की गई। इसके अलावा सिरोही, बीकानेर, जालोर, कोटा, सीकर, हरियाणा, पाली, जोधपुर आदि से पधारे पदाधिकारियों ने भी सम्मेलन में दलित साहत्य पर अपने विचार व्यक्त किये।

दलित साहित्य दिवस के इस अवसर पर 9 लोगों को विशिष्ट सेवा सम्मान–2025 से नवाजा गया। स्वामी सांवलाराम महाराज, कबीर बस्ती जैसलमेर को स्वामी जोगाराम दलितोत्थान पुरस्कार, स्वामी पूर्ण महामंडलेश्वर आत्मापूर्ण आश्रम उदयरामसर, बीकानेर को सद्‌गुरु कबीर पुरस्कार, जैसलमेर जिलाध्यक्ष मघाराम कड़ेला को अमर शहीद राजाराम कड़ेला मेघवंशी पुरस्कार, श्रीमती अंजना मेघवाल को नरपत बरवड़ पुरस्कार, समाजसेवी व भामाशाह खेताराम लीलड़, जेमला (पोकरण) को लोकदेवता बाबा रामदेव पुरस्कार आदि को प्रदान किए गए।

30 समाजसेवियों, भामाशाहों एवं दलित साहित्यकारों को 'राजस्थान गौरव सम्मान–2025' से नवाजा गया। जिनमें डॉ. रूपाराम धनदेव, पूर्व विधायक जैसलमेर, तगाराम भील ख्यातनाम अलगोजा वादक जैसलमेर, बाबूलाल निर्मल अटरू, डॉ. मोहनलाल सोनल जिला पाली, दलाभाई राव, प्रदेश महामंत्री जालोर, आसुलाल गोयल जिलाध्यक्ष जालोर, नारायणराम मेघवाल जिलाध्यक्ष सिरोही, वीराराम मेघवाल जिलाध्यक्ष जोधपुर ग्रामीण, नरपतराज जोरम, जिलाध्यक्ष जोधपुर शहर, भीकाराम मेघवाल जिलाध्यक्ष नागौर, पर्यावरणविद दलपत जुइया गोमट, जैसलमेर, दलपत हिंगड़ा भाजपा जिलाध्यक्ष जैसलमेर, श्रीमती सुशीला, ग्राम विकास अधिकारी जैसलमेर, कनिष्ठ अभियंता खेताराम पंवार,सहायक अभियंता नेमाराम पंवार, अधिशासी अभियंता प्रेमाराम राठौड़, योगेश जयपाल, एडवोकेट हिमन्त मीमरोट, प्रदेश महामंत्री (संगठन) मास्टर भोमाराम बोस बालोतरा, गुमानाराम पारेवर जैसलमेर आदि है।

50 प्रतिभाओं को 'डॉ. अम्बेडकर सम्मान–2025' से सम्मानित किया गया। जिनमें डॉ. तेजाराम परिहार पाली, लीलाधर वर्मा जिलाध्यक्ष जयपुर, ओंकारमल वर्मा जिलाध्यक्ष सीकर, समाजसेवी सुमित्रा गेंवा, जैसलमेर जिला महासचिव दुर्गा पंवार, किशनाराम कांटिया सम्भाग अध्यक्ष बीकानेर, संवाददाता हीरालाल लीलावत, शिव पंवार, खेताराम चौहान, हरीश इनखिया जिलाध्यक्ष भीम आर्मी जैसलमेर, डॉ. हंसाराम रोहिन व डॉ. छगनलाल सिरोही, समाजसेवी तगाराम बांधा जैसलमेर आदि हैं।

इसी तरह 50 प्रतिभाओं को 'प्रतिनिधि सम्मान–2025' से सम्मानित किया गया। सम्मानित होने वाली सभी प्रतिभाओं को स्वर्ण पदक, स्मृति चिन्ह, प्रशस्ति पत्र भेंट कर उनका सम्मान किया गया।

इससे पहले मंचासीन अतिथियों का साफा, शॉल, पुष्पहार, स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मान किया गया। भारतीय दलित साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर जी को उनके जन्मदिन पर जैसलमेरी पट्टू व सोनार किले की तस्वीर भेंट कर सभी ने जन्मदिन की शुभकामनाएं दी।

इस एकदिवसीय सम्मेलन में 150 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिनमें से 80 प्रतिभागी जैसलमेर के अलावा अन्य जिलों व प्रान्तों से पधारे। मंच संचालन मास्टर भोमाराम बोस कार्यक्रम संयोजक व डॉ. बागाराम हड्डा, जैसलमेर ने किया। मधाराम जैसलमेर जिलाध्यक्ष व जिला महासचिव ने सभी का आभार व्यक्त किया।•

डा. भीमराव अम्बेडकर का सामाजिक चिन्तन व दलितोद्धार

• विजय कुमार

डा. भीमराव अम्बेडकर को दलितो का मसीहा, संविधान का निर्माता तथा आधुनिक युग का मनु कहा गया है। वे सिर्फ एक राजनेता ही नहीं, गहरे सामाजिक विचारक भी थे। उनके बारे में यदि यह कहा जाये तो अतिश्योक्ति न होगी कि उनका राजनीतिक चिन्तन और कर्म उनके सामाजिक चिन्तन का ही एक प्रतिफल था। उन्होंने आजीवन एक राजनेता की कम और समाज सुधारक की भूमिका का अधिक सक्रियता के साथ निर्वाह किया। अम्बेडकर का विचार था कि मनुष्य के जीवन में धर्म या राजनीति की अपेक्षा समाज की अधिक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। समाज की उन्नति के लिए आवश्यक है कि सामाजिक बुराईयों को सबसे पहले दूर किया जाए। उनका आदर्श समाज स्वतन्त्रता, समानता और बन्धुत्व के सिद्धांतों पर आधारित है। इस समाज में गतिशीलता होनी चाहिए।

डा. अम्बेडकर का जन्म एक अछूत परिवार में हुआ था। अपने जन्म के कारण उन्हें अपने सामाजिक जीवन में अनेक यातनाएं तथा अपमान सहने पड़े थे। उन्हें अपनी बिरादरी की दुर्दशा देखकर बहुत पीड़ा होती थी। उन्होंने प्रतिज्ञा की थी कि यदि मैं दलितों की दयनीय स्थिति में सुधार नहीं कर सका तो अपनी जीवन लीला समाप्त कर दूंगा। अपनी इस प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए उन्होंने तन–मन–धन से अछूतों की दशा सुधारने का प्रयास किया। सामाजिक समानता और स्वतन्त्रता का जो संघर्ष महात्मा बुद्ध ने पहले छेड़ा था, आधुनिक युग में अम्बेडकर ने उसे पुनर्जीवित कर दिया। उनकी मान्यता थी कि जितनी जरूरत देश को आजादी की है, उससे कहीं अधिक जरूरत दलितों को सामाजिक मुक्ति की है। इसलिए वे कहते थे कि राष्ट्र की आजादी के लिए संघर्ष करने के बजाय दलितों की मुक्ति के लिए लड़ना मैं ज्यादा पसन्द करूंगा।

अम्बेडकर सवर्णों के हृदय परिवर्तन व सामाजिक सुधार सम्बन्धी कार्यक्रमों पर भरोसा नहीं करते थे। न ही वे लम्बे समय तक इन्तजार करने के पक्ष में थे। उनका कहना था कि स्वतन्त्रता तथा समानता के खोए हुए अधिकार याचना से नहीं कठिन संघर्ष से प्राप्त होते हैं। दूसरों का मोहताज बनने की बजाए अपने हक के लिए लड़ना अम्बेडकर ने अधिक उपयुक्त समझा। 1918 में सरकार द्वारा मताधिकार के प्रश्न पर विचार करने हेतु एक समिति का गठन किया गया। अम्बेडकर भी उसके सम्मुख साक्ष्य देने हेतु उपस्थित हुए तथा उन्होंने अस्पृश्यों के लिए पृथक निर्वाचन मंडल तथा स्थानों के आरक्षण की मांग की।

अम्बेडकर ने 1920 में कोल्हापुर राज्य से आर्थिक सहायता प्राप्त कर अस्पृश्यों की समस्याओं के प्रति समाज का ध्यान आकर्षित करने हेतु 'मूकनायक' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन आरम्भ किया। उन्होंने घोषणा की कि भारत को स्वतन्त्र होने के साथ–साथ श्रेष्ठ राज्य के रूप में विकसित होना चाहिए जो सभी वर्गों की धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक विषयों में समाज अधिकार दे सके। राज्य को ऐसी परिस्थितियों का निर्माण करना चाहिए कि सभी व्यक्तियों को विकास के समान अवसर सुलभ हो सके।

दलितों तथा पिछड़े वर्ग के लोगों के सामाजिक व शैक्षिक विकास सम्बन्धी कार्यों को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से 20 जुलाई 1924 को बहिष्कृत हितकारिणी सभा की स्थापना की गई। वे इस सभा की प्रबन्ध समिति के प्रधान बनाये गये। उन्होंने अपनी रचनाओं व भाषणों द्वारा दलित वर्गों का संगठन किया। उनके व्याख्यानों का मूल मन्त्र था–स्वावलम्बन तथा एकता। उन्होंने अछूतों के हित के लिए महाड़ सत्याग्रह तथा नासिक सत्याग्रह किए। महाड़ सत्याग्रह से सिद्ध किया कि अछूतों को भी सार्वजनिक तालाब से पानी लेने का अधिकार है तथा नासिक सत्याग्रह ने सिद्ध किया कि अछूत भी मन्दिर में प्रवेश कर सकते हैं। सभी दलितों को एक मंच पर एकत्र करने व उन्हें राष्ट्रीय जीवन में जनसंख्या के एक पृथक् तत्व के रूप में सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक अधिकार दिलाने के लिए उन्होंने 'आल इंडिया शिड्यूल कास्ट फेडरेशन' की स्थापना की। दलितों के हित तथा सम्मान की रक्षा की दृष्टि से उन्होंने दलित युवकों का एक स्वैच्छिक संगठन 'समता सैनिक दल' (1927) का गठन किया जिसका उद्देश्य सामाजिक असमानता जनित सभी समाजिक कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष करना था।

उन्होंने बहिष्कृत हितकारिणी सभा को बन्द कर 'डिप्रेस्ड क्लास एजुकेशन सोसाइटी' (1928) की स्थापना की। दलितों को शिक्षित करने के लिए उन्होंने 'पीपुल्स एजुकेशन सोसाइटी' नामक संस्था बनाई जिसके तत्वावधान में उन्होंने बम्बई में सिद्धार्थ कॉलेज (1946) तथा औरंगाबाद में मिलिंद कॉलेज (1951) की स्थापना की।

अम्बेडकर ने दलितों को राजनैतिक अधिकार दिलाने के उद्देश्य से 29 मई, 1928 को साईमन कमीशन की सेवा में एक ज्ञापन प्रस्तुत किया जिसमें आग्रह किया कि अनुसूचित जातियों के लिए कुछ

रक्षा उपायों की आवश्यकता है। उन्होंने अनुसूचित जातियों को विधानमण्डलों, शासन–संस्थाओं तथा लोक सेवाओं में प्रतिनिधित्व देने पर बल दिया।

1930-32 में लन्दन में भारत के भावी संविधान पर विचार करने हेतु आयोजित तीन गोलमेज सम्मेलनों में उन्होंने दलित वर्ग के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया तथा उन्होंने मांग रखी कि देश के राजनीतिक भविष्य का निर्णय करते समय अछूतों की समस्या को भी सुलझाया जाए। उनके प्रयत्नों के फलस्वरूप ब्रिटिश सरकार ने अछूतों की पृथक सत्ता स्वीकार की तथा साम्प्रदायिक निर्णय में उन्हें पृथक निर्वाचन अधिकार दिए। ब्रिटिश प्रधानमंत्री रेम्जे मैक्डोनल्ड ने अगस्त 1932 में इस निर्णय की घोषणा की। गांधी जी ने इस निर्णय में संशोधन करने के लिए आमरण अनशन किया। उपवास के फलस्वरूप गांधी जी तथा अम्बेडकर के बीच पूना समझौता हुआ जिसमें उनका पृथक प्रतिनिधित्व समाप्त कर दिया गया तथा उन्हें अधिक स्थान तथा सुविधाएं दी गईं।

सामाजिक व आर्थिक अधिकार अम्बेडकर की दृष्टि में तब तक प्रभावकारी नहीं हो सकते जब तक कि दलितों को शासन में भागीदारी प्राप्त नहीं होती। इसलिए दलितों व श्रमिकों को राजनैतिक शक्ति के रूप में संगठित करने के उद्देश्य से अम्बेडकर ने 'इण्डिपेण्डेन्ट लेबर पार्टी' (1936) का गठन किया। फरवरी 1937 में बम्बई विधानमण्डल के लिए हुए निर्वाचन में इस दल ने 13 स्थानों पर विजय प्राप्त की। जुलाई 1942 में अम्बेडकर ने एक अन्य दल 'अखिल भारतीय अनुसूचित जाति संघ' की स्थापना की। इस दल का उद्देश्य सम्पूर्ण भारत में दलित वर्गों के हितों की रक्षा करना था।

जुलाई 1942 से 1946 तक अम्बेडकर श्रमिकों के प्रतिनिधि के रूप में वायसराय की एक्जीक्यूटिव कौंसिल के सदस्य बने रहे। इस अवधि में उन्होंने सरकारी नौकरियों में अनुसूचित जातियों के लिए हिस्सा बढ़ाने की कोशिश की। उनके प्रयत्नों के फलस्वरूप भारत सरकार ने सरकारी नौकरियों में अनुसूचित जातियों के लिए 8.5 प्रतिशत स्थान आरक्षित कर दिए। उन्होंने सरकार को अनुसूचित जाति के योग्य छात्रों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए विदेशों में भेजना स्वीकार करा लिया।

दलित मुक्ति सम्बन्धी लक्ष्य की प्राप्ति में अम्बेडकर के सम्मुख कई दुविधाएं थीं। सबसे बड़ी दुविधा थी स्वराज को ब्राह्मण या हिन्दू या सवर्ण राज्य समझना जिसका अर्थ तथा ब्राह्मणों या सवर्णों के अधीन दलितों की परम्परात्मक दासता। ब्रिटिश राज्य में दलित कम से कम राजनैतिक दृष्टि से सवर्णों के अधीन नहीं थे। किन्तु वे ये भी समझते थे कि अंग्रेज शासकों से उन्हें वही लाभ मिल सकता था जहां तक ब्रिटिश सरकार शक्तिशाली सामन्तों को बिना अप्रसन्न किए ब्राह्मण या सवर्ण विरोध के नाम पर उन्हें राष्ट्रीय आन्दोलन के विरूद्ध प्रयुक्त कर सकते थे। इसलिए दलितों की वास्तविक मुक्ति बिना स्वतंत्रता प्राप्ति के संभव नहीं है। इस दृष्टि से वे स्वतंत्रता के पक्षधर थे।

1946 में अम्बेडकर संविधान सभा के निर्वाचन में बंगाल विधानसभा से विजयी होकर संविधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए। 1946 में पं. जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में निर्मित अन्तरिम मंत्रिमण्डल में उन्हें विधि मंत्री के रूप मे सम्मिलित किया गया। संविधान सभा में उन्होंने पहले भाषण में 17 दिसम्बर 1946 को आग्रह किया कि संविधान सभा के सभी सदस्य सारे मतभेद को भूलकर संयुक्त भारत के लिए कार्य करें। संविधान सभा ने उन्हें संविधान सभा की प्रारूप समिति का अध्यक्ष निर्वाचित किया। स्वतंत्र भारत में दलितों व अल्पसंख्यकों के हितों को संवैधानिक संरक्षण प्रदान किये जाने के बारे में अखिल भारतीय अनुसूचित जाति फेडरेशन की ओर से 1946 में अम्बेडकर ने संविधान सभा को एक विस्तृत ज्ञापन प्रस्तुत किया। उनकी अधिकांश मांगे संविधान सभा द्वारा स्वीकार कर ली गई तथा उन्हें वैधानिक स्वरूप प्रदान किया गया। संविधान में अस्पृश्यता का अंत कर दिया गया तथा दलित वर्गों के विरूद्ध सारे मतभेद दूर कर दिए। संविधान स्वतंत्रता, समानता व बन्धुत्व के सिद्धांतों पर आधारित है। मूल अधिकार भारत के सभी नागरिकों को प्राप्त है। अस्पृश्यता अपराध अधिनियम 1955 ने अस्पृश्यों के नागरिक अधिकारों की रक्षा की है। संविधान ने लोकसभा तथा विधानमंडलों में अनुसूचित जातियों व जनजातियों के लिए स्थानों का आरक्षण रखा है। संविधान ने दलितों को सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से कमजोर होने के बावजूद भी राजनैतिक आधार पर अपने हितों को सुरक्षित रखने में पूर्णतः सक्षम बना दिया।

डा. अम्बेडकर ने दलित वर्ग के लिए जो कुछ प्रात किया उससे सन्तुष्ट नहीं थे। उनके सम्मुख सबसे बड़ा सवाल था दलितों को मानसिक व आध्यात्मिक मुक्ति प्रदान करने का। अम्बेडकर ने दिनांक 14 अक्टूबर 1956 को बौद्ध धर्म में दीक्षा ली। उनका विश्वास था कि विश्व में बौद्ध धर्म ही एक ऐसा धर्म है जो मानव को सामाजिक, आध्यात्मिक व मानसिक दासता से मुक्ति प्रदान करता है। सत्य, प्रेम, अहिंसा व मानव कल्याण इसके सिद्धांत हैं। आधुनिक भारत में महात्मा बुद्ध के सिद्धांतों की पुनर्स्थापना का श्रेय इन नव बौद्धों को ही है।

डा. अम्बेडकर सामाजिक प्रजातंत्र की अवधारणा में विश्वास रखते थे। प्रजातंत्र का उद्देश्य जाति विहीन, वर्णविहीन व शोषण विहीन समाज की स्थापना करना है। उनका कहना था कि भारत में राजनैतिक प्रजातंत्र तब तक स्थायी

हिमायती
7 / अक्तूबर (प्रथम) 2025 (कुल पृष्ठ 8)
आर. एन. आई. नं. 40611/62
प्रकाशन तिथि : 14 अक्तूबर, 2025

नहीं हो सकता जब तक कि उसकी बुनियाद सामाजिक प्रजातंत्र पर खड़ी नहीं की जाती । सामाजिक प्रजातंत्र स्वतंत्रता, समानता व भ्रातृत्व के सिद्धांतों पर आधारित है। वे एक ऐसे समाज की स्थापना करना चाहते थे जिसमें सभी व्यक्तियों व वर्गों का स्वाभाविक सम्मिश्रण सम्भव हो सके जिसका दूसरा नाम हीं भ्रातृत्व या प्रजातंत्र है। सामाजिक प्रजातंत्र के तीन तत्वों में भ्रातृत्व को अधिक महत्व दिया। उनका मानना था कि बिना भ्रातृत्व के न तो समाज में वास्तविक अर्थ में स्वतंत्रता व समानता की प्राप्ति हो सकती है और न ही उसे अक्षुण्ण रखा जा सकता है। बौद्ध धर्म भ्रातृत्व के विकास तथा स्वतंत्रता व समानता की शिक्षा के द्वारा संविधान की रक्षा कर सकता है। उन्होंने सामाजिक संरचना में परिवर्तन की आवश्यकता पर भी बल दिया।

इस तरह डा. अम्बेडकर का चिन्तन एक आयामी नहीं, बहुआयामी है। इस कारण उन्होंने प्रभावकारी ढंग से समाज की हर समस्या पर विचार ही नहीं किया वरन् उसके समाधान हेतु उपयोगी तथा व्यावहारिक सुझाव भी दिये। वे एक राजनेता होने के साथ–साथ एक दार्शनिक, एक समाजशास्त्री, शिक्षाविद्, एक विधिवेता, एक संविधानज्ञाता और इन सबसे ऊपर एक मानवतावादी थे ! उनके द्वारा सम्पूर्ण भारतीय समाज तथा मुख्य रूप से उसके एक शोषित पीड़ित दलित वर्ग के उद्धार हेतु की गयी सेवा अद्वितीय तथा अनुपम ही नहीं है वरन् उसके माध्यम से उन्होंने समाज के विघटन को रोककर उसे स्वतंत्रता, समता एवं बन्धुत्व के सिद्धान्तों पर संगठित करने का जो महान कार्य किया है उससे सम्पूर्ण भारतीय समाज उनका चिर ऋणी है। फलतः इसी रूप में वे चिरकाल तक स्मरणीय हीं नहीं, वरन् अनुकरणीय भी बने रहेंगे। •

सावित्री बाई फुले वंदना

जन जन की जननी
राष्ट्र माता फुले
ज्वालामुखी ज्वाला की
ज्योति पुंज
जय भीम स्वरों से
कंठ कंठ भर दो
शिक्षा से मां जननी
रोम–रोम भर दो
पसरा गहन अंधकार
धरा पर आलोक फैलायी
ज्ञान विज्ञान पथ दिखलाया
कलम की प्रचंड शक्ति
तलवार धार सी
नव पल्लवों में
क्रान्ति का स्वर भर दो
काट जंजीर विषमता
समता स्वतंत्रता
न्याय बन्धुत्व
रसधार बहा दो
संगठन संघर्ष पथ दिखा
युग–युग के बंधन से
मुक्त करो
तन मन में प्रकाश भर दो
इंडिया की पहली शिक्षिका
विद्या की देवी
बहुजन की जननी
जय भीम विचारों से
रोम–रोम भर दो
पाखण्ड मिटा दो
श्रम शक्ति भर दो
निज प्रकाश से
धरती का आंचल
भर दो, भर दो, भर दो।

– यदुनाथ सेवटा

डा. सुमनाक्षर जी के 86वें जन्मदिवस पर
एक रहबर को हार्दिक बधाई

–आचार्य गुरुप्रसाद

एक रहबर याने एक नेता,
जो रहबरी का दावा तो नहीं करता,
मगर दरअसल में है वह रहबर,
एक ऐसी इन्सानियत का,
जो व्यवस्था के पिंजरे में
रीति रिवाजों के पिंजरे में,
छटपटा रही हो, निढ़ाल बेतहाशा,
वो दरवाजा खुला है–
संविधान के तहत
आईने के तहत
पिछले 78 बरसों से
मगर व्यवस्था के पिंजरे के
आहीने सींखचे पुख्ता लोहे के
रोज याद दिलाते हैं
नीच और ऊंच की
सवर्ण और अवर्ण की
गरीबी और अमीरी की
और औरत होने की
चौगिर्द दीवारें
क्योंकि इस व्यवस्था के साये तले
गरीबी बेकारी बढ़ती ही जाती है
जैसे उदय होते सूरज की रोशनी तले
बढ़ता है आदमी का साया
इसी व्यवस्था के दमखम पर
अमीरों के स्काई स्क्रेपर
गगनचुम्बी इमारतें
असमानता की साक्षी हैं।
हमारा यह रहबर
मतवतर चला आ रहा है
अपनी सांसों के तार पर सपने संजोये
सिसकती इन्सानियत के लिए
लोकतन्त्री समतावादी समाज के लिए
क्योंकि वह जानता है
कि खेतों खलिहानों में
गलियों चौगानों में
फुटपाथों गन्दी बस्तियों में
सिसकती जिंदगानियां
जो इस व्यवस्था की देन हैं
इन्हीं को बदलना है
यही वही व्यवस्था है
जो रोज लड़वाती है
हिन्दू को हरिजन से
हिन्दू को मुस्लिम से
नित्य दंगे करवाती है
डिवाइड और रूल की
नीति से हकूमत चलाती है

आज हमारे इस रहबर ने
जिंदगी के 86वें साल में कदम रखा है
मुल्क करोड़ों बाशिन्दों ने
अपने अजीज रहबर को
अपने मुबारकबाद के साथ
वचन भी दिया है
कि अये रहबरे इन्सानियत
रहबरे जम्हूरियत
अजीज उल रैदास, अजीज उल कबीर
हम सब तेरे साथ हैं
हमारा दम तेरे साथ है
एक ही इल्तिजा है
एक ही ख्वाइश है
कि तू अपनी कलम से
ऐसा ऐसा लिख
कि इस गन्दी व्यवस्था का लिखा
सब धुल जाये
और हम एक नया सवेरा देखें
और इन्सान की तरह जी सकें
हमारे इस रहबर का नाम
खूबसूरत–सुमनाक्षर है
डा. सोहनपाल सुमनाक्षर है
जिसके लिखे का एक एक अक्षर
तथाकथित वैदिक–धुरंधर
पंड़ितों के ह्रदय में शलाका चुभाता है
और हमें देता है सुगंध आजादी की। •

जन्मदिन की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं

आज 6 अक्तूबर 2025 को भारतीय दलित साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर जी का जन्मदिन है। इस समय वे राजस्थान के जैसलमेर में दलित साहित्यकारों के आमंत्रण पर गए हुए हैं। वहां उनका जन्मदिन गरिमापूर्ण ढंग से मनाया जा रहा है।

हिन्दी प्रदेशों में दलित साहित्यकारों को आपने अकादमी के माध्यम से आगे बढ़ाने का प्रेरणादायक कार्य किया है।

दिल्ली में अकादमी के बैनर तले हर साल दिसम्बर माह में अंतरराष्ट्रीय स्तर का दलित साहित्यकार सम्मेलन आयोजित किया जाता है। इस समारोह में देश–विदेश के हजारों बहुजन समाज के कार्यकर्ता और साहित्यकार उपस्थित होते हैं। इस आयोजन में अनेक दलित साहित्यकारों, समाजसेवियों और दलित, पिछड़े समाज की विख्यात हस्तियों को सम्मानित किया जाता है। आज ही उनके जन्म दिवस को दलित साहित्य दिवस के रूप में मनाया जाता है।

सभी दलित साहित्यकारों को इस अवसर पर मेरी ओर से हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं।

हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं सम्माननीय डॉ. सुमनाक्षर साब को भी। आप स्वस्थ रहें, प्रसन्न रहें और दलित साहित्यकारों का मार्गदर्शन करते रहें।

– प्रो. (डॉ.) कालीचरन 'स्नेही'
पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष
लखनऊ यूनिवर्सिटी,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

धन्यवाद ज्ञापन

मेरे 86वें जन्मदिन पर 6 अक्टूबर 2025 को मेरे जिन मित्रों, सहयोगियों, शुभचिन्तकों, प्रशंसकों ने मेरी दीर्घायु के लिए शुभकामनायें भेजी हैं, मैं उन सभी का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं और सबको साधुवाद करता हूं।

– डा. सोहनपाल सुमनाक्षर
राष्ट्रीय अध्यक्ष
भारतीय दलित साहित्य अकादमी

दलित साहित्य है समाज में हाशिये पर डाल दिये गये लोगों का साहित्य

जो कमीन व कुलीन में भेद को दर्शाता है।
जो सवर्ण व अवर्ण के भेद को दर्शाता है
जो सुर व असुर के भेद को दर्शाता है
जो श्रवण व शर्मा के भेद को दर्शाता है
जो मिश्रण व मिश्रा के भेद को दर्शाता है
जो गुप्ता व गुप्त के भेद को दर्शाता है
जो वैश्य व वैश्या के भेद को दर्शाता है
जो राजपूत व कपूत के भेद को दर्शाता है
जो कमेरा व लूटेरा के भेद को दर्शाता है
जो राक्षस व रक्षक के भेद को दर्शाता है
जो बौद्ध व बुद्दू के भेद को दर्शाता है
जो लोचन व लुच्चा के भेद को दर्शाता है
जो गुन्था व गुन्डा के भेद को समझाता है
जो अनार्य व अनाड़ी के भेद को समझाता है
जो भन्ते व भन्तू के भेद को समझाता है
जो भिक्खु व भिक्षुक के भेद को समझाता है
जो बुद्ध व बुत्त के भेद को समझाता है
जो बुद्धा व बूढ़ा के अन्तर को बताता है
जो लुम्फा व लोफर के अन्तर को बताता है
जो (बौद्ध) मठ व जड़ का विनाश कारक मट्ठा के अंतर को बताता है
जो सिद्ध व नाथ के अन्तर को बताता है
जो नाथ सम्प्रदाय का केदारनाथ, बद्रीनाथ, अमरनाथ, जगन्नाथ, सोमनाथ के सम्बन्ध को दर्शाता है
जो जैन धर्म के 24 तीर्थांकरों के नाम में से
23 तीर्थांकरों के नामों के सम्बन्ध दलितों के 'नाथ' सम्प्रदायों के साथ के
रहस्य को सुलझाता है।
जो जैन तीर्थ स्थान 'महावीर जी' का दलितों के साथ
सम्बन्ध के रहस्य का खुलासा करता है।
जो मेड़ता में
मीराबाई मन्दिर का
गुरु रविदास जी के साथ
सम्बन्ध के रहस्य को खोलता है
जो गुरु रविदास व महारानी मीरा के गुरु–शिष्य के भक्ति भाव भेद खोलता है।•

– डा. सोहनपाल सुमनाक्षर

स्वामी, सम्पादक/ प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा वन्दना आफसेट प्रिन्टर्स, A–9 सराय पीपलथला एक्सटेंशन, दिल्ली–33 में मुद्रित तथा रजि. कार्यालय : 233 टैगोर पार्क, माडल टाउन, दिल्ली–9 से प्रकाशित। □ सह सम्पादक एवं व्यवस्थापक – जय सुमनाक्षर, मो. 9810278936 **Email-sumanakshar@ymail.com**
नोट : हिमायती में प्रकाशित रचनाओं के लिए सम्पादक की सहमति जरूरी नहीं। हिमायती से सम्बन्धित किसी भी कानूनी कार्रवाई का क्षेत्र दिल्ली न्यायालय तक ही सीमित है।
सम्पादकीय कार्यालय : बी 3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन–1, दिल्ली–110009